IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

अथर्ववेद में प्राकृतिक चिकित्सा

डॉ. कीर्ति शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर- संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय, मानिकपुर, जनपद- चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

वैदिक युगीन व्यक्ति स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे। उनका भेषज विज्ञान भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। स्वयं अथर्ववेद से ही ज्ञात होता है कि तत्कालीन समाज में सैकड़ों वैद्य थे तथा हजारों प्रकार की औषधियाँ प्रयोग में लायी जाती थीं।[1] इसलिए, इस वेद का नामकरण 'भेषजवेद' के रूप में भी हुआ है।[2] यद्यपि 'शतपथ-ब्राह्मण' में ब्राह्मणों को भिषक कर्म वर्जित है।[3] परंतु अथर्ववेद से ऐसा प्रतीत होता है कि इस वेद के प्रमुख ऋषिगण इस कार्य को अपना प्रमुख व्यवसाय मानकर निरन्तर इस क्षेत्र में नवीन अन्वेषण करने में संलग्न थे। इस बात की पुष्टि स्वतः इस वेद के प्रधान ऋषि 'अथर्वा' एवं 'अंगिरस' के नाम से उल्लिखित औषधियों से हो जाती है।[4] इसकी पुष्टि इसी वेद के 'गोपथ-ब्राह्मण' और 'कौशिक-सूत्र' से भी हो जाती है, जहाँ अंगिरस द्वारा मन्त्रविधि से तथा अथर्वा द्वारा रसौषधियों से उपचार वर्णित हैं।[5] अतः ऐसा प्रतीत होता है कि ये दोनों ऋषिकुल अथर्ववेद-कालीन उपचार की दो विधियों के प्रतिनिधि थे। इन साक्ष्यों से स्पष्ट है कि अथर्ववेद का प्रारम्भिक विषय अधिकांशतः आयुर्वेद रहा होगा। सम्भवतः इसी कारण से परवर्ती वैदिक ग्रन्थों में भी चिकित्साशास्त्र के क्षेत्र में अथर्ववेद की महत्ता स्वीकार की गई है। [6]

DOI: 10.48175/IJARSCT-12265H